रणथम्भौर क्षेत्र के देवालय
''ऐतिहासिक स्थल''

*उर्मिला मीना

शोध सांराश :–

रणथम्भौर दुर्ग प्राकृतिक सुषमा और भक्ति की सुरसरी से सराबोर है। यहां नव महेश्वरों की महिमा अपार बतायी जाती है। रणथम्भौर दुर्ग ऐतिहासिक, धार्मिक एवं आध्यत्मिक दर्शनीय स्थलों की दृष्टि से विश्वभर में प्रसिद्ध है। यहां पर श्रृद्धा और भक्ति की धारा से सिंचित हर–हर महादेव की लहरियां वातावरण में गुंजायमान रहती है। यहां का गणेश धाम, अमरेश्वर धाम, सीता माता, ऐसे कितने आध्यात्मिक स्थल है।

सांकेतिक शब्द :– सहस्त्र धाराऐं, आकर्षक, श्रृंखलाऐं, अभिषेक रमणीय, सुरसरि, चट्टाने, केलेश्वर महादेव।

रणथम्भौर के चारों और अनेक ऐतिहासिक गांव, कस्बे, युद्ध स्थल, खण्डहर, पुरातत्व स्थल एवं प्राचीन इतिहास से जुडे हुए स्मारक बहुत है। दुर्ग का निकटतम बडा ऐतिहासिक नगर सवाई माधोपुर है। इसी के नाम से यह जिला है और जिला मुख्यालय भी है। सवाई माधोपुर नगर को गुलाबी शहर या जयपुर का जुडवा नगर कहे तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। जयपुर का संस्थापक राजा सवाई जयसिंह था। सवाई माधोपुर की स्थापना जयपुर के महाराजा जयसिंह के पुत्र सवाई माधोसिंह प्रथम द्वारा 19 जनवरी 1763 ई.सन् में की गयी थी। जयपुर की स्थापना 18 नवम्बर 1765 ई. सन् मैं की गयी थी। जयपुर की दृष्टि से इसकी बसावट एवं नगर व्यवस्था पर नगर–नियोजन की झलक स्पष्टता दिखती है।

जयपुर एवं कोटा राज्य की सेनाओं के बीच 1765 ई. सन् में भटवाडा नामक स्थान पर युद्ध हुआ था। जिसमें जयपुर की पराजित सेनाओं ने पलायन करके रणथम्भौर की जिस पर्वतीय घाटी में शरण ली, जिसको सुरक्षित मानकर वहाँ एक सैनिक छावनी बाद में नगर बसाने का विचार किया गया था। जिसके फलस्वरूप इस सवाई माधोपुर नगर की स्थापना की शुरूआत की गयी थी। चारों और से पर्वत श्रृंखलाओं से घिरा, जैसे कोई प्राकृतिक पर कोटा हो। यह नगर चौडी घाटी में बसाया गया है। इसके चौकडियों, मौहल्लों और समकोण बनाते समय लम्बे–लम्बे सडक गलियारे जयपुर की अनुकृति जैसा ही रमणीक लगता है।

सवाई माधोपुर शहर की स्थापना से पूर्व परम्परागत रूप से नगर के क्षैत्रपाल ''भैरव'' की स्थापना काला–गौरा भैरव मन्दिर बनाकर की गयी थी एवं इस नगर के प्रवेश द्वार का नाम भैरव द्वार या भैरू दरवाजा रखा गया था। नगर निर्माण में राजमन्दिर या गोपाल मन्दिर, राजबाग, नगर सेठ की हवेली, बावडिया, बांध, कचहरी भवन, जेल, बाजार आदि का निर्माण करवाया गया है। नगर के पूर्वी की ओर मिर्जा घाटी, रणथम्भौर दुर्ग जाने वाले पैदल मार्ग पर गलता आश्रम बनवाया गया है। यह आश्रम किसी सुरक्षित राजमहल के जैसा लगता है। इसमें अनेक प्रकार के भवन चौबारे, चौक और जलकुण्ड बनाये गये है।

नगर सेठ की हवेली, कलात्मक मन्दिर, जैन मनिदर, हनुमान मन्दिर, राजकीय भवनों एवं कारागृह का निर्माण इस नगर में होता रहा है। महाराज रामसिंह के शासनकाल में इसे निजामत मुख्यालय बनाया गया। तभी से यह फलने–फूलने लगा था। बाद में यह शहर एक औद्योगिक नगर बन गया। यहाँ पर रंगाई–छपाई, तांबा–पीतल के बर्तन, लकडी के खिलौने, चकले, बेलन, मूसल, रवस का इत्र आदि का बनना शुरू हो गया। 1940 ई. सन् में रेल्वे लाईन के आगमन पर खासा कोठी एवं रेल्वे जंक्शंन बनाया गया था। सन् 1950 ई. सन् में सीमेंन्ट फैक्ट्री की स्थापना की गयी थी।

देवालय

पुरातत्व उत्खनन, ज्ञात शिलालेखों एवं प्राचीन अभिलेखों के शोध से यह पता चलता है कि यह सवाई माधोपुर का भू–भाग शैव–उपासकों की तपोस्थली रहा है। दूसरी शताब्दी से छठी शताब्दी तक यहाँ पर मालव गणराज्य का शासक रहा था। ये शिव के उपासक थे। इन्होने स्थान–स्थान पर सधन वन प्रान्तों में शिवलिंग की स्थापना की थी। इन्होने दुर्गो तथा अन्य स्थानों पर शिव मन्दिर बनवाये थे।

पुराणों में जिनका वर्णन मिलता है :– द्वादशवे ज्योतिलिंग ''धुश्मेश्वर'' का पवित्र स्थान निकष्ट वर्ती कस्बा शिवाड में स्थिति कंवालजी प्राचीन शिव उपासना तीर्थ माना जाता है। यहॉ पर कभी ऋषि–मुनि अपनी तपस्था करते थे। इनमें निम्न है :–

अमरेश्वर :– रणथम्भौर दुर्ग के मार्ग में मध्य दांई और ''वी'' ''V'' आकार की पहाडियों में अमरेश्वर नामक सुरम्भ स्थान स्थित है। इस स्थान पर एक विशाल प्राकृतिक जल प्रपात है जो कि 40 फीट की ऊँचाई से गिरता है। यह झरना एक कुण्ड में गिरता है। इस कुण्ड में पानी शीतल एवं वर्ष पर्यन्त भरा रहता है। यहॉ पर एक पर्वतीय गुफा है उसके नीचे शिवलिंग स्थापित है। जिस पर जल की धारा बहती रहती है। यहॉ पर अनेक छोटी–छोटी देव प्रतिमाये भी है। यह जलकण देव प्रतिमाओं को स्नान कराते रहते है। यह स्थान वनाच्छादित है। यह ऋषियों की साधना उपासना का प्राचीन केन्द्र रहा है। सवाई माधोपुर शहर के धार्मिक सुरम्भ स्थलों में से यह एक मुख्य स्थान है।

केले–श्वर (केल–कुण्ड) :– यह एक धार्मिक स्थान है जो कि सवाई माधोपुर नगर के दक्षित–पश्चिमी में तीन कि. मी. दूर पहाडी पर खंदक में स्थित है।

झोझेश्वर :– यह सवाई माधोपुर नगर से दक्षिण में 15 कि. मी. दूरी पर स्थित है। यहॉ पर एक शिव मन्दिर है यह परतदार चटटानों से बनी हुई पहाडी की गोद में स्थित है। इसके सामने बहुत गहरा तालाब बना हुआ है। यहाँ पर 70–80 फुट ऊँचाई से झरना गिरता है जो पानी की पूर्ति करने के साथ–साथ तालाब को गहरा भी करता है। यहाँ पर वर्षा ऋतु में विहार के लिए काफी लोग आते है।

सोलेश्वर :– यह एक अत्यन्त प्राचीन समय का शिव पूजा स्थल है। खण्डार रोड के पास होकर यहाँ पर जाने के लिए कच्चा रास्ता है। यह मार्ग दुर्ग के नीचे से व शहर के पूर्वी भाग से निकलता है। यह देवस्थान वनों में स्थित है और बाधों का विचरण क्षेत्र है। यहाँ पर झरना पहाडी की चोटी से गिरता है। यहाँ पर शिव मन्दिर एवं कुण्ड बने हुए है। इस कुण्ड में वर्ष भर पानी भरा रहता है। यहॉ की घाटी का प्राकृतिक सौन्दर्य अनुपम है। यह स्थान चौहान शासको का पूजा स्थान था।

कमलेश्वर :– यह शिव भगवान का प्राचीन स्थान है इसे केवाल जी के नाम से जाना जाता है। यह एक पवित्र स्थान है जो कि दुर्ग के दक्षिणी में स्थित है। यहॉ पर विशाल शिव मन्दिर बना हुआ है। यहॉ पर अनेक प्राकृतिक जलकुण्ड बने हुए है। यहाँ तीन कुण्ड है। तीन कुण्डों में स्नान करने से सारे चर्मरोग दूर हो जाते है। यह ठोस प्रमाणिक सत्य भी है। यहाँ प्रतिमाह पूर्णिमा को मेला लगता है। यह सवाई माधोपुर की सीमा परस्थित मध्यकालीन तीर्थ है। यह मन्दिर नागर शैली के ऊँचे शिखर वाला है। इसका निर्माण हम्मीर के पिता जैत्र सिंह ने चाखन नदी के तट पर करवाया था। पास में जलाशय में लगे शिलालेख से पृष्टि होती है कि वि.स. 1345 में चाखन के तट पर इसका निर्माण किया गया था। इस मन्दिर के नदी गर्भगृह में शिवलिंग स्थित है। मन्दिर के पीछे की तरफ सिद्ध आचार्यो की योग साधना में लीन प्रतिभाऐं है। 13 वीं शब्दी की योगिक क्रियाओं का उदाहरण है। यह इन्दरगढ से 07 कि.मी. दूरी पर है।

रामेश्वर :– खण्डार से लगभग 20 किमी की दूरी पर चम्बल, बनास और सीप नदी के संगम पर रामेश्वर घाट स्थित है। यह राजस्थान एवं मध्यप्रदेश की सीमा पर स्थित है। यहाँ पर प्राचीन कालीन श्रीराम मन्दिर एवं शिव मन्दिर है। यहाँ पर पर्यटन विभाग नव निर्माण कार्य करवा रहे है। यहाँ पर चतुर्भुजनाथ का मन्दिर जन आस्था का केन्द्र है। यहाँ पर दूर–दूर से यात्री आते है। यह स्थान बोटिंग के लिए बहुत अच्छा स्थान है। यहॉ पर पानी में मगरमच्छों की संख्या बहुत अधिक मात्रा में है। यहाँ पर पूर्णिमा को बडा मेला लगता है। इसका एक भाग राजस्थान में है व दूसरा भाग मध्य प्रदेश में है।

धुश्मेश्वर :– द्वादश धुश्मेश्वर ज्योर्तिलिंग सवाई माधोपुर जयपुर मुख्य रेलवे लाइन पर ईसरदा स्टेशन से 03 कि मी की दूरी पर शिवाड नामक ग्राम में स्थित है। वि. स. 1081 ई. सन् में महमूद गजनवी ने जब सोमनाथ पर आक्रमण किया था उस समय इसे भी नष्ट करने का प्रयास किया था। यहॉ पर शिवरात्रि के अवसर पर एक बडा मेला लगता है। यहॉ पर स्थित देवगिरि पर्वतमाला परस्थित गढ को हेरिटेज होटल में परिवर्तित किया जा रहा है। पर्वटको के लिए यह एक महत्वपूर्ण स्थान होगा।

काला–गौरा भैरव मन्दिर :– सवाई माधोपुर शहर के दाहिनी और 70 फीट की ऊँचाई पर पर्वत मालाओं में यह मन्दिर वामाचारियों की तांत्रिक साधना का अत्यन्त प्राचीन केन्द्र रहा है। यहाँ पर तापसी और राजसी बेश में काला व गौर भैरव के साथ कई रूद्रपिण्ड, शिवलिंग, नौ दुर्गाओं की तांत्रिक प्रतिमाएँ स्थापित है। यहाँ पर लम्बोदर का विशाल स्वरूप चिन्ता कर्षक है। इसका एक स्तम्भ धरातल से ऊपर उठा हुआ है जो कि तांत्रिक किया की और संकेत करता है। इस मन्दिर का तांत्रिक विधान भी तांत्रिक मर्यादाओं के अनुसार किया गया है। इसमें तन्त्रसार से परिपूर्व भैरव चक बना हुआ है। बैशाख मास की पूर्णिमा को यहाँ मेला लगता है।

गोपाल मन्दिर :– भैरव मन्दिर से थौड़ा आगे चलने पर बायीं और संवत 1824 में जयपुर नरेशों की ओर राजसी वैभव से परिपूर्ण गोपाल मन्दिर की स्थापना की गयी थी। इस मन्दिर में अष्ट धातु की बनी हुई राधा–रानीकी विग्रह स्थापित की गयी है। इसके आंगन में एक कुण्ड बना हुआ है। इसमें विप्रान्ति भवन, मणि महल सुन्दर भवन है। इस मन्दिर में एक तह खाना भी है। गणौर व तीज की संवारियाँ आज इस मन्दिर के प्रागण तक लाई जाती है और उनकी पूजा अर्चना के बाद वापस लौट जाती है।

जिनालयों की अक्षुय कीर्ति :– सवाई माधोपुर की यह भूमि जैन धर्म के लिए कल्याणकारी रहा है। इसी कारण 1769 ई सन् में पंचकल्याण महोत्सव का आयोजन सालन पर माय में किया गया था। इनमें अनेक जैन मूर्तियों की स्थापना की गयी थी। जो कि आज भी प्रतिष्ठा का विषय है।

अतिशय क्षैत्र चमत्कार जी :– सवाई माधोपुर के आलनपुर ग्राम में श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षैत्र चमत्कार जी स्थित है। यह अनेक चमत्कारी घटनाओं से जुड़ा होने के कारण ''चमत्कारी जी'' के नाम से जाना जाता है। इस मन्दिर में विक्रय स. 1889 से भगवान आदिनाथ की स्फटिक मणि की प्रतिमा भू–गर्भ से प्राप्त हुई थी जो कि जन–जन की आस्था का केन्द्र है। यहाँ पर चन्दा प्रभु, पदम, प्रभु, शान्तिनाथ तथा पार्वतनाथ प्रभु की प्रतिभाएँ है यहाँ पर पाण्डु शिला व चरण चिन्ह स्थापित है। इस मन्दिर में प्राचीन चार यन्त्र जी व दुर्भल पाण्डु लिपी एवं जिन वाणी ग्रन्थों का सुन्दर संग्रह है। सभी सम्प्रदाय कें लोग बिना भेदभाव के दर्शन करके जीवन सफल बना रहे है। शरद पूणिया को यहाँ विशाल मेला लगता है

दर्शनीय जैन मन्दिर :– यहाँ पर अनेक जैन मन्दिरों की स्थापना की गयी। सवाई माधोपुर के अत्यन्त महत्वपूर्ण दिगम्बर जैन मन्दिर मे है सांवलिया जी का मन्दिर एक महत्वपूर्ण मन्दिर है। यह सवाई माधोपुर शहर के चौकी के पास में स्थित है। इसमें भी चन्हा प्रभु स्वामी की प्रतिमा संवत 10 की स्थापित है। यहाँ पर भगवान आदिनाथ की प्रतिमा जो कि काले पाषाण की बनी हुई है। श्रद्धा एवं भक्ति का केन्द्र हैं।

दीवान जी द्वारा निर्मित दिगम्बर जैन मन्दिर अपने कलात्मक वैभव के कराण दर्शनीय है। यहाँ की लघुत्तर व दीर्घ प्रतिमाएं आकर्षक का केन्द्र है। यह मन्दिर तेरह पंथी गोठ द्वारा निर्मित किया गया हैं इसकें द्वार पर स्वर्णक्षरों में अंकित किया गया है ''क्षेत्र सर्व प्रजाना'' यहाँ 62 कल्याण कारी प्रतिमा आसीन है।

''दिगम्बर जैन मुदायमी मन्दिर'' इस मन्दिर में पार्श्वनाथ स्वामी की मूल प्रतिमा है। इसके अलावा 5 धातु की एवं 46 पाषाण एवं दो यंत्रजी की प्रतिमाएँ है।

''दिगम्बर जैन पंचायती मन्दिर'' यह मन्दिर स्वर्ण मण्डित है। इसमें चौबीस तीर्थं करों के कलात्मक चित्र दर्शनीय है। इस मन्दिर का मूलाधार है पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा

''दिगम्बर जैन नसिंया अग्रवाल'' इस मन्दिर में 14 पाषाण व 10 धातु की एवं 07 यंत्रजी की प्रतिमा दर्शनीय है।

''दिगम्बर जैन मन्दिर मूसाव डीयान'' इसमें सुपार्श्वनाथ स्वामी की प्रतिमा दर्शनीय है।

गालव ऋषि का आश्रम गलता जी :– सवाई माधोपुर शहर के संस्थापक जयपुर नरेश सवाई माधोसिंह सिंह प्रथम (1760–1778) के द्वारा जयपुर गलता के समान शहर के पूर्वी छोर पर पहाडी चटट्ानों के मध्य ''सीता रामपुरा'' नामक गलता मन्दिर का निर्माण कराया गया है। इस मन्दिर में ''रामकुँवार जी'' का विग्रह स्थापित किया गया है। यह मन्दिर सवाई माधोपुर शहर से 2 किमी की दूरी पर खवास जी के बाग की ओर दाहिनी तरफ स्थित है।

चौथ माता (चौथ का बरवाडा) :– चौथ माता का मन्दिर सवाई माधोपुर शहर से 22 व 25 किमी की दूरी पर ''चौथ का बरवाडा'' से उत्तर की ओर डेढ किसी की दूरी पर अरावली पर्वती के पहाडी शिखर पर स्थित है। यह मध्य मन्दिर पहाडी शिखर पर 1000 /– फिट की ऊँचाई पर पर स्थित है। यह मन्दिर दूर से ही लोगों को अपनी ओर आकृर्षित करता है। 1451 ई. सन् में बूंदी के चौहान शासन भीम सिंह ने टोंक जिले की अलीगढ तहसील के पचाला ग्राम से चौथ माता (पार्वती) एवं गणेश के बाल स्वरूप की स्थापना माघ माह की कृष्ण पक्ष की चतृर्थी को बरवाडा में पहाडी पर मन्दिर बनवार की थी। माता पार्वती एवं गणेश की एक साथ पूजा के विधान का यह पहला मन्दिर है इसी कारण इस स्थान का नाम चौथ का बरवाडा रखा गया था।

पहले चौथ माता हाडोती के भील व मीणाओं की कुलदेवी के रूप में पूजी जाती थी। आगे जाकर यह चौहान,

राठौड व राजावत राजवंशो की कुलदेवी के रूप में पूजी जाने लगी थी। कुछ समय बाद जन–जन की आस्था का केन्द्र बनी। 1671 ई. सन् में मन्दिर के दक्षिण की ओर एक तिबारे का निर्माण करवाया गया था। चौथ माता मन्दिर के चारों ओर का दृश्य बहुत ही मनोहारी लगता है। यहॉ पर प्रत्येक माह की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को यहाँ लक्खी मेला लगता है। यहा चौथ माता की चढाई में 706–07 सीढीयॉ लगभग चढाई करनी पडती है।

सीता माता :– सवाई माधोपुर नगर से दक्षिणी–पश्चिमी में सामान्य अस्पताल के पास जीनापुर मार्ग पर 07 किमी की दूरी पर सीता माता का मन्दिर पर्वत श्रृखलओं से घिरा हुआ है। यह पृथ्वीतल से लगभग 7500 फीट की ऊँचाई पर सीता माता का मन्दिर स्थित है। यह मन्दिर प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर होने के कारण एक अवलोक नीय स्थान है। यहाँ पर वर्षा ऋतु में झरनों का गिरना जल धारा का वेग पूर्व प्रवाह तथा सघन वृक्षो के कारण यहॉ का सौन्दर्य चिन्ताकर्षक है। यहाँ का सौन्दर्य तो ''गूंगे केरी शरकरा, खावै और मुस्काय'' वाली कहावत को चरितार्थ करता है।

अणैश्वर महादेव के कुण्ड (भगवतगढ) सवाई माधोपुर के पश्चिम में 25 किसी की दूरी पर भगवतगढ कस्बे के दक्षिणी में नाथ सम्प्रदाय की सिद्ध–सीठ के रूप में अणैश्वर महादेव की तपोभूमि है। इसका वर्णन पुराणों में भी मिलता है। यहॉ पर सात कुण्ड है जिनमें दो कुण्ड बडे है। इनका उपयोग तरण ताल के रूप में किया जाता है। दो वस्त्र धोने के काम में लिए जाते है। अन्य का उपयोग पीने के पानी के लिए किया जाता है। यह स्थान चारों ओर से पर्वत श्रैणियों से घिरा हुआ है। यह एक मनोहारी स्थान है। यहाँ पर कार्तिक मास की पूर्णिमा को मेला लगता है। यहाँ पर पहाडी अंचल में केशोराय जी का मन्दिर है। यह राजपूत शैली में बना हुआ है। इस मन्दिर में पानी का एक ढांका बहुत महत्वपूर्ण है।

खण्डार दुर्ग में प्राचीन जैन मन्दिर दर्शनीय है। यहाँ पर पहाडी चटटानों में बाये से दाये महावीर स्वामी की प्रतिमा पद्मासन में खडी है। भगवान पार्श्वनाथ की मूर्ति आदमकद में खडी है। ऋषभदेव एवं शान्तिनाथ भगवान की प्रतिमा ध्यान मग्न है। यह अदभुत आकर्षण केन्द्र है। ये प्रतिमाएँ निरापद स्थल में आसीन है।

विशाल हनुमान प्रतिमा :– खण्डार दुर्ग के पास एक छोटे मन्दिर गृह में विशाल हनुमान प्रतिमा के दर्शन होते है। इस प्रतिमा के पैरो तले असुर शक्ति का संहार दिखाई पडता है। इस विशाल हनुमान जी की प्रतिमा की मुख्य बात है कि यह एक ही पत्थर पर उत्कीर्ण है।

यहाँ खण्डार दुर्ग में आगे बढने पर सती एवं लक्षमण कुण्डो को पार करने के बाद ऊँचे शिखर वाला चतुर्भुज मन्दिर है। इस मन्दिर के शिखर का मुख्य भाग एवं मण्डोवर के नीचे का भाग लाल पत्थर के बने हुए है। इस मन्दिर के पूर्व व पश्चिम में सीढिया बनी हुई है।

यह मन्दिर उत्तराचिमुख एक ऊँचे प्लेटफोर्म पर बना हुआ है। इसके बाहर आयताकार खुला भाग है। यह मन्दिर सभागार स्तम्भो के सहारे एक आकर्षण का केन्द्र है। इसमें गर्भग्रह की छत सुन्दर कमलदल से आवृत की गयी है। इसके नीचे उत्तर की ओर लम्बाकार रूप में ''झिरी कुण्ड'' है। यह मन्दिर स्थापत्य की दृष्टि से खण्डार दुर्ग का सबसे सुन्दर मन्दिर है। इस मन्दिर की प्रतिमाएँ वर्तमान समय में खण्डार कस्बे के चौबाने पर मालियों के मन्दिर में स्थापित है।

झिरी कुण्ड के ऊपर लाल पत्थर से बना हुआ एक अन्य शिखर वाला मन्दिर है। यह गोविन्द देव जी का मन्दिर है। इसी मन्दिर के पास जगतपाल जी का मन्दिर स्थित है जो कि गुम्बधकार में है। इस मन्दिर की प्रतिमा नरसिह जी के मन्दिर में बताई जाती है।

जयन्ती माता का मन्दिर :– शक्ति और शौर्य का प्रतीक नव दुर्गा के स्वरूपों में जयन्ती माता का नाम भी आता है। यह मन्दिर दुर्ग के दक्षिण–पूर्वी प्राचीर के सहारे एक कोने पर मठाकार रूप में स्थित है। यहाँ पर वर्ष पर्यन्त पूजा अर्चना की जाती है एवं नवरात्रों में विशेष उपासना की जाती है। इस मन्दिर के पश्चिम में एक गुप्तकालीन मार्ग भी स्थित है। जयन्ती माता की भूल प्रतिमा तो आजकल शेर सिह जी के बाग में स्थापित की गयी है। यहाँ पर प्रतिवर्ष मेला सगता है।

यहाँ पर प्राचीन दो जैन मन्दिर भी है। एक बडा मन्दिर है जो कि बाजार के बीच में बना हुआ है। इस मन्दिर में आदिनाथ भगवान की प्रतिमा 1661 संवत की समोशरण पर स्थापित है। इस मन्दिर का स्वर्ण का चित्रांकन विमुग्धकारी शैली में है। अन्य जैन आचार्यो की प्रतिमा अत्यन्त प्राचीन है।

दुसरा मन्दिर दुर्ग की तलहठी में है। इस मन्दिर का जीणोद्वार सम्बत 1841 ई. सन् में जयपुर नरेश प्रतापसिंह के समय भट्टारक सुरेन्द्र कीर्ति ने करवाया था।

वैष्णव सम्प्रदाम के मन्दिरों में चतुर्भुज नाथ जी रघुनाथ जी नरसिह जी रामकुमार जी एवं रामलला के मन्दिर है। इन मन्दिरों में प्रतिमाएँ खण्डार दुर्ग से लाकर स्थापित की गयी थी।

पंच मुखी हनुमान जी :– सवाई माधोपुर से खण्डार रास्ते पर 32 किमी की दूरी पर मेई कला ग्राम के पश्चिमी में 06 किमी की दूरी पर एक पहाडी भू–भाग में पंगडण्डी पर खटोल नामक स्थान है। इसकी ऊँचाई समुद्ध तल से लगभग 40 मीटर है। यह स्थान चारों ओर से पहाडियों से घिरा हुआ है। इसके पास ही पंचमुखी हनुमान प्रतिमा स्थित है। यह प्रतिमा पंचमुखी है। यहाँ पर वर्ष पर्यन्त शिवलिंग पर गोमुख से जलाभिषेक होता रहता है।

झरेल के बालाजी :– सवाई माधोपुर शहर से पाली जाने वाले मार्ग पर 18 किमी की दूरी पर चम्बल की लहरों के बीच एक चटटानी भू–भाग पर झरेल के बालाजी का स्थान आकर्षण का केन्द्र है। वर्षा के समय यहाँ नौका से पहुँचा जा सकता है। एक अतुल जलराशि के बीच यह स्थान प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए एक सुखद स्थान है।

चारभुजा जी का मन्दिर :– रणथम्भौर दुर्ग में रानी महल के पास ''चार भुजा जी का मन्दिर है।'' इस मन्दिर की प्रतिमा को रावसुर्जन हाडा ने उस समय हटा ली जी थी जब अकबर ने इस किले का संभाला। राव हाडा ने इस प्रतिमा को बून्दी में स्थापित कर दी थी जो कि आज भी स्थित है।

राजमन्दिर :– रणथम्भौर दुर्ग में रानी महल और बत्तीस खम्बो की छतरी के बीच से एक पगण्डी का रास्ता अन्दर की ओर जाता है। यहाँ पर रणथम्भौर दुर्ग का राजमन्दिर स्थित है। इस मन्दिर में कोई मूर्ति नही है। लेकिन यह भवन परम्परा के अनुसार उच्च कोटी का बना हुआ है। इसमें सभा मण्डप गर्भ ग्रह उच्च शिखर पदक्षिणा पथ आदि बने हुए है। इसी के पास एक ''हनुमान मन्दिर'' भी स्थापित है। यहाँ पर संधी जी की हवेली से थोडा आगे चलने पर ''बरमानी मन्दिर'' है।

गणेश मन्दिर :– रणथम्भौर दुर्ग में एक दीवार से दाहिनी ओर परकोटे से जुडा हुआ ''गणेश मन्दिर'' है। यह गणेश मन्दिर वर्तमान में भी जन–जन की आस्था ओर विश्वास का केन्द्र है। यह मन्दिर रणथम्भौर की कीर्ति के बनाये हुए है। रणथम्भौर दुर्ग में पहुँचने वाले यात्री केवल ''गणेशजी'' का दर्शन एवं आर्शिवाद प्राप्त करने के लिए आते है। जो यात्री नही पहुँच पाते है वे अपने कार्यो के सफल संचालन के लिए आमन्त्रण पत्र व मनी आर्डर से निमंत्रण भेजते है। डाक–विभाग गणपति रणथम्भौर के नाम से देश–विदेश की डाक यहाँ तक पहुँचाता है। पुजारी प्रत्येक पत्र को पढकर गणेश जी को सुनाता है एवं रिद्वि–सिद्वि सहित आमंत्रण कार्त्ता के यहाँ तक पहुँचने का आग्रह करता है।

गणपति की केवल मुखाकृति ही वन्दनीय है। इन गणपति के तीन नेत्र है। इनके दोनों ओर रिद्वि–सिद्वि विराजमान है। यह गणेश मन्दिर दीर्घकाल से ही श्रद्धा ओर भक्ति की पवित्र सुरसरी को अक्षुरण रूप से बनाये हुए है।

गंगामन्दिर :– सुख सागर से थोडा आगे चलने पर एक चटटानी भू–भाग है। यहाँ पर ''गुप्त गंगा नामक'' एक अट्टू जल का भण्डारण है जो कि पहाडी चटटानों में गुफा के मध्य स्थित है। इस गुहमा स्थान में सीढियों का घुमाव है। यहाँ ''गंगा मन्दिर'' स्थापित है। यहाँ पर हमेशा जलाभरा रहता है।

शिव मन्दिर :– इस शिव मन्दिर के नीचे द्वार है तथा बाई ओर सीढियाँ एवं यहाँ पर दर्शनाथियो के लिए लोहे की रेलिंग लगादी गयी है। 1301 ई. सन् में चौहान राजा हम्मीर अलाहदीन खलजी को पराजित करके दुर्ग में वापस लौटा तो उसने देखा कि चारों और बीरानी छायी हुई है। रानी महल में जौहर की चिता में बीरांगनाओं के शव धधक रहे थे। हम्मीर की पुत्री पदमला भी सरोवर में कूदकर प्राण त्याग चुकी थी। अपने ही सामने राजा हम्मीर सब कुछ गंवा चुका था। एसी स्थिति में हम्मीर ने अपना शीश काटकर यहाँ स्थिति शिव को अर्पित कर दिया था। अवशेष में यह आज भी विद्यमान है। यहाँ पर पहाडी चटटानों से रिसता जल शिव प्रतिमा पर पूरे वर्ष अभिषेक करता रहता है। इस मन्दिर के आगे चलने पर ''स्योपोलि'' नामक द्वार है। इस द्वार पर एक ताम्रपत्र संवत 1647 का लगा हुआ है। इस दुर्ग का अन्तिम द्वार है

प्राचीन जैन मन्दिर :– पदमला सरोवर के पश्चिमी भाग में समतल मार्ग दो भागों में बट जाता है। एक तो काली मन्दिर की ओर जाता है। यह शक्ति का प्राचीन सिद्व पीठ है यहाँ अनेक वामा चारी लागों को चमत्कृत करते है। दूसरा मार्ग जो कि उतुग शिखर का छतरियो से परिपूर्ण है यह दिगम्बर जैन मन्दिर की ओर जाता है। इस मन्दिर का निर्माण 8वीं शताब्दी किया गया था। इस मन्दिर के शिखर पर पृथ्वी राज प्रथम ने सोने के कलश चढाये थे। इस मन्दिर में संम्भवनाथ स्वामी की मूलप्रतिमा आसीन है।

इसका भवन निर्माण सादगी पूर्ण है। यहाँ पर आसोज माह मैं प्रतिवर्ष एक विशाल मेला लगता है। इसमें दूर–दूर के जैन मतावलम्बी भाग लेते है।

इसके पास दाहिनी ओर के रास्ते पर ''लक्ष्मी–नारायण मन्दिर'' है।

***सहायक आचार्य**
इतिहास विभाग
शहीद कैप्टन रिपुदमन सिंह राजकीय महाविद्यालय
सवाई माधोपुर (राज.)

सन्दर्भ – ग्रन्थ सूची

पुस्तक का नाम	लेखक	पृ.सं.
विश्व विरासत स्थल– रणथम्भौर,	डॉ. सूरज जिद्दी	34
वहीं	वहीं	35

वहीं	वहीं	31
वहीं	वहीं	32
सवाई माधोपुर दर्शन	डॉ. आर.एस. राजावत	46—47
वहीं	वहीं	48
वहीं	वहीं	50
वहीं	वहीं	51
वहीं	वहीं	52
वहीं	वहीं	53—54
वहीं	वहीं	56—57
वहीं	वहीं	58
वहीं	वहीं	64
वहीं	वहीं	66—67
वहीं	वहीं	70
वहीं	वहीं	73
वहीं	वहीं	74
वहीं	वहीं	24
वहीं	वहीं	25—26
वहीं	वहीं	27
वहीं	वहीं	30—31
वहीं	वहीं	32